delhi_Page 1 and 2 14/04/2015 09:37 Page 10

जड़ व चैतन्य में भेद...

प्राय: मूल प्रश्न सभी का यह है कि हरेक जड़ वस्तु में आत्मा का निवास है और चैतन्य वस्तु भी इससे भिन्न नहीं है। जड़ वस्तुओं के अंदर वे सब क्रियाएं होती हैं जो एक चैतन्य के अंदर होती हैं। सामान्य विज्ञान भी कहता है कि अणु, परमाणुओं से जड़ वस्तुओं की रचना हुई है। उदाहरण के लिए थल या ज़मीन अनेक घन वस्तुओं से सम्पन्न है, मिट्टी, पत्थर, बालू, खनिज लवण आदि आदि। विज्ञान ने तय किया है कि चाहे मूल धातु हो या संयुक्त वस्तुएं, वे जड़ ही हैं। इन जड़ वस्तुओं में न तो चेतन आत्मा है और न ही परमात्मा।

उदाहरणार्थ, जैसे नदी का पानी चलता है लेकिन वो जड़ है। सजीव न होते हुए भी पानी की गति का कारण क्या है? विज्ञान ने हमें समझाया है कि इसका कारण पृथ्वी का उतार और गुरुत्वाकर्षण की शक्ति है। जैसे पानी की रचना हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के सम्मिलन से हुई है। चाहे हाइड्रोजन के अणु परमाणु हों, ऑक्सीजन के अणु परमाणु हों फिर भी ये सब जड़ वस्तुएं ही हैं। इनकी चलनात्मक स्थिति होने के बावजूद भी ये अपनी ही गुरुत्वाकर्षण शक्ति से क्रियान्वित हैं, इनके अंदर कोई परमात्मा की शक्ति कार्य नहीं कर रही है। दूसरा उदाहरण, जैसे हवा एक जड़ वस्तु है, हवा में हाइड्रोजन, ऑक्सीज़न, नाइट्रोजन आदि मूल धातुओं के परमाणु तैरते रहते हैं। हवा एक ओर से दूसरी ओर बहती है, इसका कारण यह है कि भूमि के जिस भाग में सूर्य का ताप अधिक होता है वहाँ हवा गर्म होकर हल्की हो जाती है और खाली जगह की ओर चल पड़ती है। अत: यह सिद्ध है कि हवा का बहना भी शीत और ताप के कारण है। इसको कोई परमात्मा नहीं चला रहा है।

दुनिया में कुछ शक्तियां गुप्त हैं तथा कुछ प्रत्यक्ष हैं लेकिन ना समझने के अ कारण लोग उसे (जड़ को) चेतन कह देते हैं और ये परमात्मा ही संचालित कर रहा है। उदाहरण के लिए, चुम्बकीय शक्ति, गुरुत्वाकर्षण शक्ति, परमाणु शक्ति, सौर्य शक्ति आदि प्राकृतिक शक्तियां प्रकृति की ही शक्तियां हैं।

इसके विपरीत परमात्मा अनुभूति शक्ति, अनुभाव शक्ति और संकल्प शक्ति, प्रज्ञा शक्ति, निर्णय शक्ति से भरपूर परम शक्ति है।

अगर हम इसको अध्यात्म की भाषा में लें तो कहेंगे कि जिस वस्तु में ज्ञान नहीं है सोचने समझने की शक्ति नहीं है वह जड़ है। दया, करुणा, प्रेम, संतुष्टता जिसमें नहीं है वो जड़ है। जिस वस्तु में सुख-दु:ख, संतोष, सहन करने की शक्ति नहीं है वो जड़ वस्तु है।

वहीं चेतन शक्ति आत्मा का निर्माण किसी जड़ वस्तु से नहीं हुआ है। इसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। आत्मा में संकल्प शक्ति, निर्णय करने की शक्ति, विचार-विमर्श करने की शक्ति, विश्लेषण करने की शक्ति आदि शक्तियां होती हैं। और दूसरा आत्मा अनादि, अविनाशी और अविभाज्य है, जबकि जड़ वस्तुएं अणु व परमाणु के सम्मिलन से बनती हैं। आत्मा की संख्या एक नहीं अनेक होती है। हर आत्मा अपने आप में स्वतंत्र है, अर्थात् एक मनुष्य के शरीर में रहने वाली आत्मा दूसरे मनुष्य के शरीर में रहने वाली आत्मा से पूर्णतया भिन्न है। रूप में भले वो एक समान हैं, परंतु गुण, शक्तियों व संस्कारों में उनमें अंतर है। इससे स्पष्ट है कि स्वतंत्र अस्तित्व होने से आत्मा किसी जड़ वस्तु में विलीन नहीं हो सकती। आत्मा जब प्रकृति धर्म से निर्मित माता के गर्भ में शिशु के शरीर में प्रवेश कर जन्म लेती है तो वो जीव आत्मा कहलाती है। और वो इसी तरह एक शरीर से दूसरे शरीर में स्थानांतरित होती रहती है। आत्मा हमेशा स्त्री और पुरुष के शरीरों को लेकर अभिनय करती रहती है। और इसी अभिनय का परिणाम उसके पाप और पुण्य होते हैं। लेकिन जड़ वस्तु इन सब बातों से पूर्णतया भिन्न है।

आत्मा शरीर नहीं है, आत्मा जड़ और जीव वस्तु नहीं है, आत्मा जड़ व जीव में सर्वव्यापी नहीं है। इनका अपना स्वतंत्र अस्तित्व है, ये चेतन है और चिरकालिक है।

उपरोक्त बातों से आप सभी को स्पष्ट हो गया होगा कि जड़ और चेतन अलग-अलग चीज़ें हैं। कोई भी जड़ वस्तु परमात्मा व आत्मा की शक्ति से संचालित नहीं है बल्कि कुछ व्यक्त व अव्यक्त शक्तियां जैसे गुरुत्वाकर्षण शक्ति, चुम्बकीय शक्ति आदि शक्तियों से संचालित होती हैं, जिन्हें सामान्य मानव नहीं समझ सकता। नहीं समझने के कारण वो इसे परमात्म शक्ति से संचालित हुआ मानते हैं।

-ब्र.कु.अनुज,दिल्ली।

खुशियाँ आपके साथ...

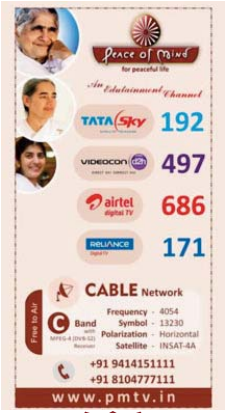

7 कदम राजयोग की ओर...

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: मैं एक कुमार हूँ। बचपन से ही मेरे बाप ने मेरे साथ बहुत डाट-फटकार की। पढ़ते हुए साथियों से भी मुझे अपमानित होना पड़ा । इस कारण मैं अपने जीवन में खुश नहीं रहा। मैंने दो साल से राजयोग भी सीखा है क्योंकि मैं खुशी व शांति की तलाश में था, परंतु अब भी मैं बहुत खुश नहीं रहता हूँ और मेरी एकाग्रता भी अच्छी नहीं रहती है। मैं एक अच्छा योगी व सदा प्रसन्नचित्त व्यक्ति बनना चाहता हूँ, क्या करूं?

उत्तर: कई मनुष्यों के साथ ये होता है कि बचपन से ही उन्हें प्यार का अभाव रहता है और छोटी आयु में बार-बार डाँट सुनने से अंतर्मन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे मनुष्य की श्रेष्ठ भावनाएं मर जाती हैं और अपने बड़ों के लिए भी मन में कटु भावनाएं पैदा हो जाती हैं। ये दोनों ही चीज़ें मनुष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव डालती हैं। आपके मित्रों ने भी आपसे अच्छा व्यवहार नहीं किया। यह सब मनुष्यात्माओं के पूर्व जन्मों के वायब्रेशन्स के कारण होता है।

अब सर्वप्रथम आपको अपने फादर के प्रति अपनी कटु दृष्टि को मधुर बनाना है। ज्ञान मार्ग में होने के कारण आप जानते होंगे कि यहाँ हर आत्मा अपना-अपना पार्ट बजा रही है और हर आत्मा विषय-वासनाओं के बहुत वश है। इसलिये सच्चे मन से रोज़ सवेरे उन्हें क्षमा कर दो। आखिर वो हैं तो आपके पापा ही। सात दिन तक रोज़ सवेरे उन्हें क्षमादान देकर दुआएं भी दे देना।

अब आप अपने वर्तमान और 21 जन्मों के श्रेष्ठ भाग्य बनाने पर ध्यान दें। ऐसा ना हो कि वर्तमान का प्रभाव आपको जन्म-जम के श्रेष्ठ भाग्य से वंचित कर दे, इसलिए रोज़ एक-एक अव्यक्त मुरली का अध्ययन करें। सारा दिन अच्छे स्वमान की प्रैक्टिस करें और एक लिस्ट बनायें कि बाबा से मुझे इस जीवन में क्या-क्या मिला। उसे बार-बार याद करके अपने चित्त को आनंदित करें और अपने पापा को सच्चे मन से धन्यवाद दें कि उनके कारण ही आपको भगवान मिले।

प्रश्न: मैं कई वर्षों से नींद की समस्या से पीड़ित हूँ। मैं डिप्रेशन का भी शिकार रहा हूँ। कुछ समय से मैंने ज्ञान-योग सीखा है। मैं 2-3 नींद की गोली खाकर ही सोता हूँ। फिर भी नींद नहीं आती। मैं सुख से सोना चाहता हूँ। गोलियां छोड़ना चाहता हूँ। योग मैंने सीखा तो है, पर योग मुझे बहुत कठिन लगता है, क्या करूं?

उत्तर: जिनके पूर्व जन्मों के कर्मों का ज़्यादा खाता है, उन्हें 3 तरह से सजाएं मिलती हैं – 1. रात को नींद ना आना, 2. भटकती आत्माओं का प्रभाव होना, 3. मानसिक पीड़ा होना या मानसिक रोगी बनना। लेकिन ये जानकर आपको निराश होने की आवश्यकता नहीं है। अब आपको पुण्यकर्मों का खाता बढ़ाना है और योगबल से पूर्व के विकर्मों को नष्ट करना है, परंतु डिप्रेशन की स्थिति में योग में एकाग्र होना नितांत कठिन होता है। आप कुछ समय के लिए एकाग्रता वाले अभ्यास छोड़ दें। केवल इस स्वमान में रहा करें कि भगवान मेरे साथ हैं।

सवेरे आप जब भी उठो, 108 बार लिखना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और रात को सोने से पूर्व 108 बार लिखना कि मैं एक महान आत्मा हूँ। इससे धीरे-धीरे आपके ब्रेन को एनर्जी मिलने लगेगी और कुछ ही दिनों में आपकी नींद की समस्या दूर होने लगेगी। नींद की गोलियां धीरे-धीरे कम करते जाईयेगा।

आपको उन सभी मनुष्यात्माओं से क्षमा याचना भी करनी है जिन्हें आपने पूर्व जन्मों में कष्ट पहुँचाया हो क्योंकि ये अति सूक्ष्म गति है कि हज़ारों वर्षों में हम जिनको भी कष्ट पहुँचाते हैं, उनसे हम जुड़े रहते हैं। उनकी निगेटिव एनर्जी हमें कष्ट देती रहती है। हमारे ब्रेन को हाइपर एक्टिव कर देती है और मनुष्य सो नहीं पाता। इसलिए उनसे आपको सच्चे मन से क्षमा याचना करनी है। सवेरे उठकर ये संकल्प करें कि मैंने पिछले हज़ारों वर्षों में जिसको भी कष्ट दिया हो, मैं उन सभी से हाथ जोड़कर सच्चे मन से क्षमा याचना करता हूँ। आप मुझे क्षमादान दें और प्रसन्न हो जायें। ऐसा करने से आपके और उनके बीच जो निगेटिव एनर्जी का आदान-प्रदान हो रहा है, वो समाप्त हो जाएगा और आपके ऊपर से काले बादल समाप्त हो जाएंगे। आपका डिप्रेशन समाप्त होगा और आप योग का अच्छा अनुभव कर सकेंगे।

प्रश्न: मेरा नाम सुनीता है। मैं दर्शन शास्त्र की विद्यार्थी हूँ। मुझे एक संकल्प बहुत परेशान करता है कि जब हम सब भगवान के बच्चे हैं तो वो हमें यहाँ भेजता ही क्यों है। खुद ऊपर आनंद मनाता है और हम यहाँ दु:खी हैं। जब मैं ये सब सोचती हूँ तो दु:खी हो जाती हूँ। क्या वो हमें इस आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं कर सकता?

उत्तर: भगवान हमारा परमपिता है। कोई भी पिता ये नहीं चाहता कि उसके बच्चे सदा ही उसके पास बैठे रहें, पढ़ने ना जाएं, योग्य ना बनें, उसका बिज़नेस ना संभालें या फील्ड में जाकर उसका नाम रोशन ना करें। आप ये मानेंगे कि अपने बच्चे को श्रेष्ठ पार्ट प्ले करते हुए देख हर माता-पिता खुश होते हैं। घर में तो निठल्ले लोग बैठा करते हैं। भगवान की नज़र में महान वही है जो इस सृष्टि पर महान कार्य करे।

आप संसार की वर्तमान हालत को देखकर बहुत दु:खी होती होंगी परंतु ये संसार सदा ऐसा नहीं था, जैसा अब है। ये तो संसार की निकृष्टतम् स्थिति है, कलयुग का अंत है। ये संसार तो कभी सतयुग था, जहाँ धर्म और मानवता अपने सम्पूर्ण स्थिति में थे। मनुष्य देवत्व सम्पन्न था। मनुष्य ने स्वयं अपना ये बुरा हाल किया है। वो भौतिकता की ओर बढ़ा, वो पापकर्म की ओर अग्रसर हुआ, उसने विषय-वासनाओं को ही आनंद मान लिया इसलिए उसकी ये अधोगति हुई।

भगवान हमें आवागमन के चक्र से मुक्त क्यों करे जबकि हम स्वयं इसमें बंधे रहना चाहते हैं। यदि आप एक करोड़ लोगों का सर्वे करें कि चलो आपको आवागमन के चक्र से मुक्त कर दें तो शायद एक प्रतिशत लोग भी इसके लिए तैयार नहीं होंगे और ज़रा सोचें तो सही कि स्वयं भगवान भी इस आवागमन के चक्र से मुक्त नहीं है, उसे भी धर्म-ग्लानि के समय अवतरित होना पड़ता है।

आपकी इच्छा है कि आप अपने परमपिता के साथ ही रहें तो आप अपना राजयोग का अभ्यास बढ़ायें। इसके द्वारा सतत् आपको उसके साथ रहने का दिव्य अनुभव प्राप्त होगा और राजयोग से आपको ये भी आभास हो जाएगा कि संसार में श्रेष्ठ पार्ट बजाना कितना महत्वपूर्ण है। इसलिए आप दु:खी ना हों। संसार के इस खेल को साक्षी होकर देखें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com